दलित विमर्श का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

संध्या तिवारी (Ph. D.)
DEPARTMENT OF HINDI,
HRP DEGREE COLLEGE BARKHERA PILIBHIT (U.P.), INDIA

शोध–सार

स्वामी विवेकानन्द पंचमों को दलित वर्ग कहा करते थे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि विवेकानन्द द्वारा प्रयुक्त विषेशण ज्यादा सही हैं। हमने उन्हें पद दलित किया है और परिणामस्वरूप अपने को भी दबाया है ....

वैदिक काल –

वैदिक काल से आधुनिक काल तक सभी जातियों ने विभिन्न उतार–चढ़ाव देखे हैं और अपने पौरुष के बल पर पुनः अपने लिये आत्म सम्मान प्राप्त किया

शूद्रों वर्ग जो कि वर्ण के आधार पर नहीं, कार्य के आधार पर विभाजित था उत्तरोत्तर निम्न से निम्नतर होता चला गया।

उत्तर वैदिक काल -

वर्ण में विभाजित, अश्पृश्यता की भावना से दूर, यज्ञादि के अवषेश पाने के अधिकारी वेदाध्ययन के समान अधिकारी। समाज में सम्माननीय स्थिति।

मौर्य काल -

सामाजिक वर्ण वयवस्था के जटिल नियम। चाणक्य शूद्र कहकर सम्बोधित किया।
शूद्रों में कई जातियों, उपजातियों का घालमेल।
दास प्रथा व प्रचलन।

मौर्योत्तर काल -

यवन, पार्थियन, शक एवं कुशाणों का भारतीय समाज में आक्रमणकारियों के रूप में प्रवेश, समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था का अत्याधिक ह्रास।

गुप्तकाल -

'आपद्धर्म धर्म का आविर्भाव'। आपातकाल में कोई भी किसी व्यवसाय को चुन सकता था जैसे शूद्र सेना मे भर्ती हो सकते थे और ब्राह्मण व्यापार के लिये देश विदेश जा सकते थे तथा 'नमः' शब्द का प्रयोग करके पंच महायज्ञ कर सकते थे। वाटर्ज की पुस्तक "life of lliven Tsang" के माध्य से हमें ज्ञात हुआ कि कसाई, जल्लाद, भंगी आदि जातियां नगर सीमा के पार निवास करतीं थीं।

गुप्तोत्तर काल एवं प्राक् मुस्लिम समाज -

गुप्तोत्तर काल में अश्पृश्यता की भावना अपने चरमोत्कर्श पर थी। ह्वेनसांग, अलमसूली, अलबरूनी आदि के विवरण से पता चलता है कि इस काल में जातियों एवं प्रजातियों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई। शूद्र दो भाग में बॅट गये, सत् और असत्। सत् पंच महायज्ञ करने में अधकारी थे पर असत् नहीं।

मध्यकालीन भारत –

भक्ति काल की लहर में पुनः सभी एक हो गये। राम का नाम सब के लिये। हम आत्मा है, इसका दुंदुभी नाद जुलाहा कबीरदास ने किया फिर रैदास, रायदास इआदि कितने ही शूद्र कवि समाज में सम्मानीय स्थान बना सके और पूजे गये। उसके उपरान्त भी दलित वर्ग कोई विषेश उन्नति नहीं कर पाया।

आधुनिक काल –

महात्मा गाँधी, डा0 भीमराव अम्बेडकर, सी0ए0 मुदालियार, टी0एस0 नायर एवं पी0टी0 चेन्नी ने दलितों की दशा सुधारने का भरसक प्रयत्न किया। ‘समता का अधिकार’ संविधान अनुच्छेद 11, अनुच्छेद 35 में विस्तार से दिया गया तथा दलित विस्फोट पैदा करने में जिन साहित्यकारों का रचनात्मक योगदान है उनमें एक महत्वपूर्ण नाम अक्करमाशी के लेखक “शरण कुमार लिंवाले” का भी है। उन्होंने “नर वानर” नामक उपन्यास में दिखाया है कि नर वानर में जिस प्रकार नर वानर अपने समूह में होने वाले नर बच्चों को मार डालता है, केवल मादा बच्चों को ही जिन्दा छोड़ता है। ऐसा वह इसलिये करता है क्योंकि वह नहीं चाहता है कि उसका भी कोई प्रतिद्वन्दी तैयार हो। ऐसे ही नर वानर वे दलित नेता हैं जो अपनी सत्ता व महत्वाकाँक्षा के लिये हर हाल में दलित आन्दोलन पर एकाधिकार चाहते हैं। आज बसपा दलित मुक्ति का समाधान बिना संघर्ष किये राजनीतिक रणनीतियां बनाकर राजसत्ता प्राप्त करने में खोज रही है।

परन्तु मैं जहाँ तक दलित विमर्ष को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देख पायी हूँ वहाँ तक वर्ग विहीन समाज की स्थापना जातिविहीन समाज के बाद ही सम्भव है।

दलित विमर्ष का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

किसी ऐसी सन्तोषजनक कसौटी का अविष्कार जिससे दलित वर्ग को अलग से पहचाना जा सके, सरल नहीं। समस्या, मूलतः सामाजिक एवं धार्मिक है, इसलिये अलग-अलग समय पर जो कसौटियाँ सुझाई है, वे सामाजिक नियम अथवा सामाजिक उदाहरण पर निर्भर है।

वैदिक कालीन व्यवस्था –

दलित वर्ग को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने पर इस शब्द का प्रयोग कहीं से कहीं तक नहीं दिखायी पड़ता है। वैदिक कालीन भारत में ‘ऋग्वेद’ के पुरुष सूक्त दशम मंडल के आधार पर ‘शूद्र’ शब्द का उल्लेख मिलता है।

“ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् वाहू राजन्यः कृतः
अरु तदस्य यदवैष्य पद्म्या षूद्रो अजायत।।“
(पुरूष सूक्त – 90, 10वां मण्डल)

अर्थात, उस ब्रह्म पुरूष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य और पैरों से शूद्रों का जन्म हुआ। वेदों में और कहीं भी वैश्य और शूद्र वर्णन नहीं मिलता। ‘निरूक्त’ में पंचजनों– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य , शूद्र और निशाद का वर्णन मिलता है।

उत्तर वैदिक कालीन वर्ण व्यवस्था –

मनु स्मृति में ऋग्वेदानुसार उत्तर वैदिक काल स्पष्ट रूप से चार वर्णों में विभाजित था, परन्तु अस्पृश्यता की भावना का उदय नहीं हुआ था। उपनिषदों में उल्लिखित ‘सत्यकाम जावालि’ तथा ‘अनाश्रुति’ की कथाओं से स्पष्ट है कि शूद्र दर्शन के अध्ययन से वंचति नहीं थे, ‘वृहदारण्यक’ तथा ‘छान्दोग्य’ उपनिषदों में कहा गया कि ब्रह्म लोक में सभी समान है। अतः चाण्डाल भी यज्ञ का अवशेष पाने का अधिकारी है।

‘‘ब्रह्मणं क्षत्रियं वैष्यं षूदं्र च निवर्तयत्
द्विशा कत्वात्मानो देहमर्धेन पुरूशोऽभवत’’
(मनु स्मृति, श्लोक सं0 31)

इस समय शूद्रों को यज्ञोपवीत धारण का अधिकार नहीं था। शूद्रों को ‘अन्यस्यप्रेस्य’ अर्थात तीन वर्णों का सेवक कहा गया है। ‘शतपथ ब्राह्मण’ में शूद्रों के सोमयज्ञ में भाग लेने की बात कही गई है।

उत्तर वैदिक काल में शूद्रों के अन्य वर्ण भी थे जैसे – चांडाल, निषाद, पौल्कष, मागध, उग्र, वेदहव, अयोगव आदि। ‘शतपथ ब्राह्मण’ एंव ‘कावक संहिता’ में गोविकर्त्तन, तथा (बढ़ई) एवं रथकार को शूद्र वर्ग में रखा गया था।

उपजाति के रूप में इस काल में व्यापारी, लोहार, चमार, कर्मकार, मल्लाह आदि का उल्लेख मिलता है। परन्तु यह सभी अपने कर्म के कारण शूद्र कहलाये जाति के कारण नहीं और न ही इनमें कोई ऊँच–नीच की भावना थी।

कालान्तर में सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था वर्णाश्रम धर्म के जटिल नियमों में आबद्ध हो गई, परिणामस्वरूप् छठी शताब्दी ई0पू0 के आते–आते प्रतिक्रिया–स्वरूप् जैन एवं बौद्ध धर्मों का उदय हुआ और इन धाराओं ने शूद्र जो कि समाज में तिरस्कृत जीवन जी रहे थे, को अपनाया और पुनः जीवन दान दिया।

मौर्य काल की सामाजिक व्यवस्था –

कौटिल्य ने वर्णाश्रम व्यवस्था के महत्व को स्पष्ट करते हुये इसकी रक्षा को राजा का कर्तव्य बताया। इन्होनें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र के व्यवसाय तथा वेतन को अलग– अलग निर्धारित किया –

‘‘कर्मकरः यथा सम्भाषितं वेतन लभेत।
कर्मकातानुरूपम सम्भाषितवेतनः।‘
कर्षकः सस्यानां गोपालकः सर्पिषा।
वैदेहकः पण्यानामात्मना व्यवहृतानां।‘
दशभागम सम्भाषित वेतनो लभेत।’’

(कौटिल्य अर्थशास्त्र, राज्य में कानून व्यवस्था, पे0नं0-106)
कौटिल्य ने अर्थस्त्र में स्पष्ट रुप से निर्देश दिया है कि शूद्र दासों से भिन्न है और उन्हें आर्य कहकर सम्मानित भी किया तथा उनको बन्धक बनाये जाने पर तीव्र विरोध किया।

‘‘दास आर्य जाति के प्राणभूत है इनसे सेवा का कार्य लेना जाति के हित के लिये है। म्लेच्छ लोग और उनकी सन्तान दासता के कार्य करते हैं। वे बेचे अथवा गिरवी भी रखे जा सकते है। परन्तु आर्य जाति के लोग कभी दास नहीं बनाये जा सकते।’’

(कौटिल्य अर्थशास्त्र, राज्य में कानून व्यवस्था, पे0न 106-107)

अतः स्पष्ट हो जाता है कि आज जो दलित वर्ग की श्रेणी में रखे गये है उन्हें प्राचीन काल में दासों को श्रेणी में रखा जाता था।

मौर्योत्तर कालीन वर्ण व्यवस्था –

वैदिक काल से चली आ रही वर्ण व्यवस्था का गम्भीर ह्रास मौर्योत्तर काल में उस समय हुआ जब विदेशी आक्रमण के रूप में यवन, पार्शियन, शक एवं कुषाणों का भारतीय समाज में प्रवेश हुआ। स्मृतिकारों ने उन्हें निम्न कोटि के क्षत्रियों की श्रेणी में रखा।

गुप्त काल आते–आते जाति प्रथा उतनी जटिल नहीं रह गयी जितनी परवर्ती कालों में थी। ब्राह्मणादि ने व्यापारादि व्यवसायों के कार्यों को करना प्रारम्भ कर दिया। ‘मृच्दकटिकम्’ में ‘चारुदत्त’ नामक ब्राह्मण वाणिज्य का कार्य करता था। ब्राह्मणों के व्यापार के अतिरिक्त कुछ वैश्य तथा शूद्र शासकों का उल्लेख भी मिलता है।

गुप्त काल –

कुछ गुप्ताकालीन ग्रन्थों में ब्राह्मणों को निर्देशित किया गया है कि वे शूद्र का अन्न ग्रहण न करें। परन्तु 'बृहस्पति' ने संकट के क्षणों में शूद्रों और दासों से भी अन्न ग्रहण करने की आज्ञा दी है।

'याज्ञवल्क्य' ने शूद्रों के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण अपनाते हुये इन्हें व्यापारी कारीगर तथा कृषक होने की अनुमति दी है तथा 'नमः' शब्द का प्रयोग करके पंचमहायज्ञ करने की भी अनुमति दी थी। इस प्रकार गुप्तकाल में इन्हे रामायण, महाभारत एवं पुराण सुनने का अधिकार प्राप्त था।
गुप्त काल में अनेक शूद्र जातियों का वर्णन मिलता है जैसे –

पारश्व –

इस जाति की उत्पत्ति 'ब्राह्मण पुरूष' एवं 'शूद्र स्त्री' से हुई। इन्हें 'निषाद' भी कहा जाता है। 'रामचरित्र मानस' में भी एक पात्र का नाम 'निषाद राज गुह' है।

उग्र –

'गौतम' के अनुसार 'वैश्य पुरूष' और 'शूद्र स्त्री' से उत्पन्न जाति 'उग्र' कहलायी, पर स्मृतियों का मानना है कि इस जाति की उत्पत्ति 'क्षत्रिय पुरूष' एवं 'शूद्र जाति की स्त्री' से हुई। इनका मुख्य कार्य बिल के अन्दर से जानवरों को निकालकर जीवन यापन करना था।

सर्वप्रथम 'फाह्यान' ने गुप्तकालीन समाज में अस्पश्य जाति के होने की बात कही। स्मृतियों ने इन्हें 'अन्त्यज व चाण्डाल' कहा। 'पाणिनी' ने इसका उल्लेख 'निरवासित शूद्र' के रुप में किया है।

सम्भवतः इस जाति की उत्पत्ति 'शूद्र पुरुष' और 'ब्राह्मण स्त्री' से हुयी। यह जाति बस्ती के बाहर निवास करती थी। इनका मुख्य कार्य था शिकार करना और श्मशान –घाट की रखवाली करना। पौराणिक गाथाओं के पन्नों में दबी राजा हरिश्चन्द्र की कहानी में भी 'हरिश्चन्द्र' ने स्वयं को चाण्डाल के हाथों बेचने की बात कही और कर्मस्वरूप उन्हें श्मशान –घाट की रखवाली का कार्य सौंपा गया, जो कि अपने की मृत्यु के समय भी बिना 'कर' लिये उसे वहाँ जलाने नहीं देने की वीभत्स तथा कारूणिक घटना का उल्लेख मिलता है।

गुप्तकाल में दास प्रथा का प्रचलन था। यह दलित वर्ग का ही हिस्सा था। नारद ने 8 प्रकार के दासों का उल्लेख किया है, जिनमें प्रमुख थे –

1. **उपहारस्वरूप मिला हुआ दास।**
2. **स्वामी द्वारा प्रदत्त दास।**
3. **ऋण चुकता न कर पाने के कारण बना दास।**
4. **दाँव पर लगा कर हारा हुआ दास।**
5. **स्वयं से दासत्व ग्रहण करना।**
6. **एक निश्चित समय के लिये अपने को दास बनाना।**
7. **दासी के प्रेमजाल में फंसने वाला एवं**

8. आत्म विक्रयी दास।

इस समय दासों को उत्पादन कार्य से अलग रखा गया है जबकि मौर्यो में दास उत्पादन के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। दासों को दासत्व भाव से मुक्त कराने का प्रथम प्रयास **'नारद'** ने किया।

ह्वेनसांग की भारत यात्रा का वृतांत हमें चीनी ग्रन्थ **'सीयू की वाटर्ज'** की पुस्तक **'On Yuan Chwang's Travels in India' 'एवं' 'Life of liven Tsang'** से मिलता है कि अछूत वर्ग जैसे- मछुआरे, कसाई, जल्लाद, भंगी आदि जातियाँ नगर सीमा के बाहर निवास करती थी।

गुप्तोत्तर काल एवं प्राक् मुस्लिक समाज –

इस समय की परम्परा के अनुसार भारतीय समाज मुख्यतः चार वर्णों में विभाजित था, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। इसके अतिरिक्त ह्वेनसांग, अलमसूदी, अलबरुनी आदि से प्राप्त विवरण से पता चलता है कि इस काल में जातियों एवं प्रजातियों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई। परम्परागत चार वर्ण भी अनके जातियों मे विभक्त हो गये तथा अनेक जातियाँ इनमें समाहित कर ली गई।

'अलबरुनी' ने लिखा है कि इस समय वैश्य एवं शूद्र की स्थिति मं कोई विशेष परिवर्तन नहीं था। इस काल में स्मृतियों में शूद्रों के लिये सेवानिवृत्ति के अतिरिक्त कुछ अन्य व्यवस्थाओं का उल्लेख मिलता है। 'आत्रि देवल' एवं 'पाराशर' ने कृषि, पशुपालन, वाणिज्य एवं शिल्प जैसे व्यवसायों को शूद्रो के लिये उपयुक्त बताया है।

8वीं शताब्दी के 'नारद स्मृति' के दीक्षाकार असहाय ने कीनासों की गणना शूद्र कृषकों में की है। 'असहाय' ने आपातकाल में शूद्रों को क्षत्रिय कर्म को अपनाने की व्यवस्था भी थी।

पाराशर स्मृति (600 से 900 ई0) में पहली बार फसल बटाई करने वाली आर्थिक जाति का उल्लेख मिलता है। इस समय शूद्र दो वर्ग में विभाजित थे- **'सत और असत'** । सत वर्ग शूद्र पौराणिक विधि के अनुसार संस्कार एवं पंच-महायज्ञ का अनुष्ठान कर सकते थे किन्तु असत को यह अधिकार नहीं था।

'असत' को ही इस काल में 'चाण्डाल और अस्पृश्य' समझा जाता था। इनमे अन्य जातियाँ जैसे रजकर (धोबी), चर्मकार, नट, वरूड, कैवर्त्त, धीवर, भेद, गिल्ल आदि का उल्लेख मिलता है। अस्पृश्य जातियों की संख्या में हुई वृद्धि से स्पष्ट है कि गुप्तोत्तर काल में अस्पृश्यता की भावना अपने चरमोत्कर्ष पर थी।

11वीं-12वीं में जैन अचार्यों, शान्त तांत्रिक सम्प्रदायों तथा चावार्कों ने जाति प्रथा तथा उसके प्रतिबन्धों का विरोध करते हुये कर्म की महत्वता का प्रतिपादन किया।

मध्यकालीन भारत में शूद्रों की दशा में कोई उल्लखनीय सुधार नहीं आया। मंदिरों में तोड़फोड़ , करों का बढ़ जाना, मस्जिद, मीनार, किला, दरवाजा इत्यादि की बाढ़ सी आ जाना, से ग्रस्त हिन्दू जनता में भक्ति का सूत्रपात हुआ और यह काल इतिहास का शान्तिकाल कहलाया।

कबीरदास जी –

कबीरदास जी जुलाहा परिवार से सम्बन्धित थे और उन्होंने आजीवन अजीविका के रूप में अपने व्यवसाय को स्वीकार किया तथा समाज और अध्यात्म दोनों मे अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान दिया।

रैदास –

रैदास जाति से चमार थे। निर्गुणब्रह्म के उपासक रैदास ने हिन्दू ओर मुसलमानों मे कोई भेद नहीं माना। उन्होनें -**'रायदासी सम्प्रदाय'** की स्थापना की।

रायदास –

रायदास जी बनारस में मोची का कार्य करते थे। भक्त कवियों में उनका नाम भी आदर से लिया जाता है।

मुगल शासनकाल में दलित वर्ग के प्रति कोई विषेश क्रियाकलाप नहीं हुये। उनकी दशा बद से बदतर होती गई।

आधुनिक काल –

सन् 1898 में प्रार्थना समाज (बम्बई) द्वारा एक दलित वर्ग मिशन प्रारम्भ किया। गया। 1833 ई0 में दास प्रथा पर इंग्लैण्ड में प्रतिबन्ध लगाया गया और भारत में सन् 1843 में इस प्रथा को अवैध घोषित किया गया।

गाँधी जी ने भारतीय समाज व्याप्त दलित वर्ग की कुप्रथा में कुछ सुधार के उद्देश्य से अछूतों को 'हरिजन' कहा और 'हरिजन' नामक पत्र का सम्पादन भी किया। उन्होंने हरिजनों के कल्याण के लिये वर्ष 1932 में हरिजन सेवक संघ की स्थापना की। इसी आन्दोलन की अगली कड़ी के रूप में डा0 बी0 आर0 अम्बेडेकर को याद किया जाता है। निम्न जाति में पैदा हुये 'अम्बेडकर' जीवन भर छुआछूत और जाति प्रथा से लड़ते रहे। इन्होंने ''आल इण्डिया डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन, (अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ)" की स्थापना की। 1906 ई0 में बी0आर0 शिन्दे के नेतृत्व में बम्बई में 'डिप्रेस्ड क्लासेज मिशन सोसाइटी' की स्थापना की गई। मद्रास में 'डिप्रेस्ड क्लासेज सोसाइटी' की स्थापना 1909 ई0 में की गयी। दक्षिण भारत में 1920 ई0 'में ई0वी0 रामास्वामी नायर' के नेतृत्व में 'आत्म सम्मान' आन्दोलन ने 1925 में बिना ब्राह्मण के सहयोग से शादी, जबरन मन्दिर प्रवेश नास्तिकवाद एवं मनुस्मृति को जलाने का तर्क दिया।

सी0एन0 मुदालियार, टी0एन0 नायर एवं पी0टी0 चेन्नी के नेतृत्व में दक्षिण में जस्टिस पार्टी की स्थापना की गयी। बंगाल में 1899 ई0 में जाति निर्धारण सभा की स्थापना की गयी। केरल में 'एझावा आन्दोलन' के अन्तर्गत इस आन्दोलन के नेताओं द्वारा 1903 में 'श्री नारायण धर्म परिपालन योगम' की स्थापना की गयी।

''अस्पृश्यता का अन्त किया जाता है और उसका किसी भी रूप में आचरण निषिद्ध किया जाता है। अस्पृश्यता से उपजी किसी भी निर्योग्यिा को लागू करना अपराध होगा, जो विधि के अनुसार दण्डनीय होगा। ''

समता का अधिकार, संविधान अनुच्छेद–17

अस्पृश्यता का अन्त करने के लिये कानून का अधिकार संसद के अनुच्छेद 35 द्वारा दिया गया। संसद ने इस अधिकार के प्रयोग में 1955 में अस्पृश्यता ''(अपराध) 1955'' में पारित किया गया। बाद में इसे 1976 में संशोधित किया गया। बाद में इसे 1976 में संशोधित करके इसका नाम **'सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम 1955'** रखा गया।

सन् 1901 की जनगणना में बंगाल में विस्तृत वर्गीकरण करक जातियों को सात समुहों में रखा गया। सातवें स्तर की जो जाति थी जो कि निषिद्ध वस्तुओं को खाती थी और भंगी आदि निम्नकोटि के माने जाने वाले व्यवसाय अपनाती थी। सन् 1911 में पुनः सरकारी आदेश पर आदिम जातियों की गणना की गयी, जो कि हिन्दुओं की मान्यता के अनुरूप नहीं थी। सन् 1919 में आदिवासियों को भी इसी श्रेणी में शामिल कर लिया गया। 1921 में जनगणना सूची में पहली बाद दलित वर्ग की तालिका रखी गई परन्तु ये नहीं बताया गया कि इस प्रकार समूह बनाने के मानदण्ड क्या रख गये ?

सहायक ग्रन्थ सूची

संस्कृत ग्रन्थ सूची -
ऋग्वेद - पुरूष सूक्त- 10वां मण्डल
निरूक्त
मनुस्मृति
वृहदारण्यक
छान्दोग्य उपनिषद
शतपथ ब्राह्मण
काठक संहिता
मृच्छकटिकम
वृहस्पति स्मृति
नारद स्मृति
याज्ञवल्क्य स्मृति
पराशर स्मृति

हिन्दी ग्रन्थ –
कौटिल्य अर्थशास्त्र
रामचरित मानस
हरिजन - महात्मा गाँधी

चीनी ग्रन्थ –
सी यूकी - व्हेनसांग

Englidh Books :
Onyuanchwang's Travells in India & - Watarz
Life of Illiven Isnag